अध्ययन **10**

गवाही देना : शिष्य लोग अपने कार्य में

जिस ने तुम्हारा उद्धार किया उसके विष्य में दूसरे को बताओ।

मसीही होने के कारण हमें यीशु मसीह के विषय दूसरे को बताना है और वे कैसे अपनी जीवनों में उसको ग्रहण करके नया जन्म पा सकते हैं। इसी को गवाही देना कहते हैं।

यीशु ने कहा,

> *"कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"*
> (मत्ती 28:18–19)

मान लीजिए आप एक पास के झील में डूब रहे थे और तैरना नहीं जानते और मैं पानी में कूद कर आप को बाहर निकाल दिया और आप को बचा लिया। आप यही सोचेंगे कि मैं संसार में सब से अच्छा व्यक्ति हूँ। आप अपने सभी मित्रों को इसके विषय बताना चाहेंगे और आप मेरे विषय बताने से शर्मिन्दा नहीं होंगे। यीशु मसीह ने आप को शारीरिक मृत्यु से भी अधिक भयानक बात से बचाया है। उसने आपको नरक से तथा परमेश्वर से अनन्त काल के लिये अलग होने से बचाया है। हमारे पास यह उत्तर दायित्व है कि हम लोगों के पास जाकर बताएं कि परमेश्वर

ने हमारे लिये क्या क्या कार्य किया है। हमारे मित्र सह कर्मी तथा परिवार, वास्तविक्ता में सारा संसार को जानने की आवश्यकता है कि यीशु मसीह में उनके लिये क्या उपहार है।

यीशु ने कहा,

"तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकुस 16:15)

किसी ने आपको यीशु के विषय बताया कि उसने आप के लिये कैसा बड़ा कार्य किया है । आप उसे अपने तक सीमित न रखें। उसके विषय दूसरों को भी बताएं।

मैं क्या कहता हूँ ?

यीशु मसीह के द्वारा आपका जीवन परिवर्तन हो गया है। आप इस बात को किस प्रकार साधारण, सहज तथा स्पष्ट भाषा में लोगों के सामने वर्णन करेंगे ? इसी को ही अपनी गवाही देना कहा जाता है। आपको भी विचार करना है कि जो कुछ आप विश्वास करते हैं उसके विषय किस प्रकार स्पष्टता से वर्णन करेंगे। दूसरा पाठ इस विषय में अध्ययन करनें में आप की सहायता करेगा । यह प्रसांगिक बाइबल पदों को समझने में सहायक सिद्ध होगी । निम्नलिखित तालिका क्रम से मार्ग दिखलाता है कि उद्धार केवल यीशु मसीह में है।

परमेश्वर का प्रेम तथा यीशु मसीह में उद्धार की योजना।	यूहन्ना 3:16
मनुष्य का पापी होना–	रोमियो 3:23
पाप का दण्ड–	रोमियों 6:23
पापों से फिरना (पश्चताप करना)–	प्रारित 3:19
यीशु मसीह ही उत्तर है–	युहन्ना 14:6
मसीह को ग्रहण करना –	रोमियों 10:9,10
उद्धार का निश्चय–	यूहन्ना 5:24 1 यूहन्ना 5:11,12

पुनर्निरिक्षण (उन्हें पूछें कि वे अपने मित्रों को क्या बताए जो मसीही होना चाहते हैं)

पहला वचन आप अपनी बाइबल के साम्हने वाला पृष्ट में लिखे ताकि आप इसे सहज से ढूँढ़ लें तब आप उस पद के नीचे रेखा नीचे खींचें। दूसरा वचन को इसी प्रकार उस पृष्ट के नीचे लिखे लें ताकि आप को मालूम हो जाए कि यह कहां लिखा है। तब आप इस प्रकार बढ़ते जाने में सक्षम होंगे। फिर भी पद याद रखने का सबसे अच्छा तरीका है इन पदों को या अपने से चुने हुए पदों को याद करना।

पतरस ने लिखा है :–

"और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछें तो उसे उत्तर देने के लियें सर्वदा तैयार रहो ।" (1 पतरस 3:15)

जैसे ही एक वयक्ति परमेश्वर के उद्धार देने वाला प्रेम को अनुभव कर लेता है, आप भी अधिक उन से बात करें और मसीह के विषय बताएं। आप इस बात का ख्याल रखें कि आप साधारण तथा साफ–साफ शब्दों में उन से बात करें तथा उन्हें भ्रम में न डालें। जब आप यीशु के विषय बताते है तो मौलिक सच्चाई पर ही आप की बात आधारित हो अर्थात यीशु मसीह उसका तथा जो कुछ उस ने उन लोगों के लिये किया है।

गवाही देने के लिये नमूना :–

यीशु ने यूहन्ना 4:7–26 में गवाही देने का एक सुन्दर नमूना दिया है। उसने बाइबल में लिखी हुई बातों से बातचीत आरम्भ किया जिन बातों के विषय स्त्री परिचित थी। तब उसने अपनी बातचीत आत्मिक बातों की ओर बदल दिया। उसने उन सच्चाई का वर्णन किया जिस से स्त्री अपना पाप पहचान पाई। उस ने आप को मसीह प्रकट किया तथा उसको बताया कि वह उसकी आवश्यक्ता को पूरा कर सकता है। हम भी ठीक इसी प्रकार से लोगों को बता सकते हैं न कि हम अपने ओर ईशारा करें। हम केवल यीशु की ओर ईशारा करें।

प्रार्थना :—

दूसरी बात जिसे हम कर सकते हैं वह है प्रार्थना। हम अपने परिवार के लिए तथा मित्रों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, ताकि परमेश्वर उन पर अपने को प्रगट करें तथा प्रतिति भी कराएं कि उन्हें यीशु को अपना प्रभु तथा उद्धार कर्त्ता करके ग्रहण करने की आवश्यकता है। आप अपनें मित्रों तथा सगे सम्बन्धियों की एक सूचि बना। और नियमित रुप से उन के लिये प्रार्थना करना आरम्भ कर दें। आप परमेश्वर के आश्र्चयजनक कार्य से चकित होंगे।

सचेत रहें

यीशु मसीह के लिये गवाही देने का समय, स्थान, सही नियम की आवश्यकता है। परमेश्वर से प्रार्थना करें ताकि आप का मार्ग दर्शन हो सकें तथा परमेश्वर आप को ऐसा अवसर प्रदान करें । किसी को परेशान करना अच्छा नहीं की वह आत्म समर्पण करें या लगातार अपने को पीड़ा दे। गवाही देने का सबसे अच्छा विधी यह है कि दूसरों को यह दर्शाना कि यीशु ने आप के जीवन में योग्यतानुसार स्थायी परिवर्तन ला दिया है तथा इस बात को स्वयं अपने से बोलने दें। दूसरे लोग जिन के साथ आपने सम्बन्ध स्थापित किया है सम्भव है वे आकर आप से इस परिवर्तन के विषय पूछताछ करें। उनको बताने के लिये तैयार रहें।

आप का उपहास किया जा सकता है, तब आप क्या करेंगें!

आप का हंसी उड़ाया जा सकता है, आप को बुरा—भला कहा जा सकता है या जो कुछ आप बताते उसके विषय में आप का उपहास किया जा सकता है, तब क्या ? लोगों ने यीशु के साथ इस से कहीं अधिक बुरा व्यवहार किया और वह कुछ कर सकता था। परन्तु उस ने बदला नहीं लिया क्योंकि वह हमारे लिये दुःख उठाने तथा मरने के लिये आया। हम ने सब से बड़ा धन प्राप्त कर लिया है, वह कोई भी प्राप्त कर सकता है अर्थात परमेश्वर के साथ मित्रता। जो कूछ वह हम

से करने के लिये कहता है उसके द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह तथा आशिषें उन मनुष्यों के दया से अधिक बढ़कर है जो आज है फिर मुर्झा जाते हैं तथा मिट जाते हैं।

यीशु ने कहा,

"यदि कोई मेरी सेवा करें तो मेरे पीछे हो ले और जहां मैं हुँ वहां मेरा सेवक भी होगा यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरा पिता उसका आदर करेगा।" (यूहन्ना 12:26)

प्रश्न तथा संकेत :–

1. प्रभु यीशु का नाम लेने और अपने उद्धार के लिये विश्वास करने से पहले लोगों के लिये कौन सी बात आवश्यक है ? (रोमियों 10:13–15)
2. मसीह के पास आत्माओं को लाने के लिये हमारे पास कौन सी जिम्मेदारी है ? (2 कुरिन्थियों 5:18–21)
3. हम किस बात के लिये प्रर्थाना करें जब हम मसीह के लिये गवाही देते हैं ? (प्ररित 1:8, 4:29–31, याकूब 4:3)
4. हम क्यों निर्भय होकर गवाही देना जारी रखें ? (रोमियों 1:16)
5. क्या हम अपने जीवन के द्वारा मसीह को दूसरे लोगों के साम्हने प्रगट कर सकते है ? (मत्ती 5:13–16)
6. किस समय यीशु मसीह स्वर्गीय पिंता के साम्हने हमें मान लेगा ? (मत्ती 10:32)
7. अपनी गवाही लिखें एक पृष्ठ से अधिक प्रयोग न करें।
8. निम्नलिखित का किस प्रकार उत्तर देगें ?
   क. भला कार्य एवं दूसरे की सहायता करने की अपेक्षा कौन सी बात का परमेश्वर और अधिक आशा करते हैं। (इफिसियों 2:8–9 तीतुस 3:5)
   ख. क्या सभी धर्म एक ही स्थान पर पहुंचाता है ? (यूहन्ना 14:6)
   ग. क्या मैं ने कभी भी कोई बड़ी गलती नहीं की है ? (यूहन्ना 3:3 रोमियों 3:32)

घ. मैं ने अपने जीवन के अन्तिम समय में यीशु के साथ चलने का इरादा किया है। (2 कुरिन्थियों 6:2 याकूब 4:14)

प्रार्थना :—

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ क्योंकि तू ने मेरे लिये सब कुछ पहले ही यीशु मसीह में कर दिया है। तू ने मुझे अपना प्रेम तथा आशा दी है और मैं तुझे सराहता हूँ कि तू ने मुझे अपने पुत्र के रुप में स्वीकार कर लिया है। प्रभु मेरी सहायता कर ताकि तेरी गवाही दे सकूं जैसे मैं समझता हूँ मुझे होना चाहिए। मुझे ऐसा लोग दिखा जिसके लिये मुझे प्रार्थना की आवश्यकता है तथा तेरे विषय गवाही दे सकूँ । मैं चाहता हूँ कि जैसे मैं तुझे समझ गया हूँ वैसे वे सभी तुझे समझ लें। मेरी सहायता कर एक ऐसा जीवन व्यतीत करने के लिये जो तुझ को प्रसन्न करे ताकि लोग मेरे जीवन में तुझ को देख सकें। प्रभु यीशु मसीह तू ने कार्य करना आरम्भ किया है और तू ने हमें आज्ञा दी है कि इस कार्य को पूरा करें और सब जातियों के लोगों को चेला बना सकें। प्रभु मैं अपने आप को तेरे हाथों में सौंपता हूँ ताकि यह कार्य पूरा किया जाए । मैं तैयार हूँ मुझे भेज। मैं यह प्रार्थना यीशु के नाम से और उसकी महिमा के लिये करता हूँ। आमीन।